ग्रामीण विकास

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» ग्रामीण विकास का परिचय और महत्व

प्रश्न 1 (आसान). भारत की कितनी जनसंख्या कृषि पर निर्भर है?
उत्तर – लगभग दो-तिहाई जनसंख्या।

प्रश्न 2 (आसान). ग्रामीण विकास से आप क्या समझते हैं?
उत्तर – गाँवों के लोगों के जीवन को बेहतर बनाने और ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए किए गए सभी प्रयास।

प्रश्न 3 (मध्यम). ग्रामीण विकास का महत्व शहरी विकास से क्यों अधिक माना जाता है?
उत्तर – क्योंकि भारत की ज़्यादातर आबादी गाँवों में रहती है और कृषि पर निर्भर है। जब तक गाँव विकसित नहीं होंगे, तब तक देश की वास्तविक प्रगति संभव नहीं है। शहरों का विकास तभी अधूरा है, जब तक गाँवों का विकास न हो।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी अधिक हो तो इसका राष्ट्रीय विकास पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
उत्तर – अगर ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी अधिक है, तो राष्ट्रीय विकास धीमा हो जाएगा। गरीब लोगों की क्रय शक्ति कम होगी, जिससे बाज़ार में मांग घटेगी। वे शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं से वंचित रहेंगे, जिससे मानव पूंजी का विकास रुक जाएगा। इससे देश की कुल आर्थिक वृद्धि प्रभावित होगी और सामाजिक असमानता बढ़ेगी।

» ग्रामीण विकास क्या है?

प्रश्न 5 (आसान). ग्रामीण विकास का सबसे मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – गाँव में रहने वाले लोगों के जीवन-स्तर में सुधार करना।

प्रश्न 6 (आसान). क्या गाँव में स्कूल बनाना ग्रामीण विकास का हिस्सा है?
उत्तर – हाँ, बिलकुल है।

प्रश्न 7 (मध्यम). ग्रामीण विकास के किन्हीं दो प्रमुख क्षेत्रों के नाम बताओ जिन पर ध्यान देना ज़रूरी है।
उत्तर – मानव संसाधन का विकास और आधारिक संरचना का विकास।

प्रश्न 8 (कठिन). अगर किसी गाँव में सिंचाई की सुविधा नहीं है, तो ग्रामीण विकास के तहत इस समस्या को कैसे हल किया जा सकता है?
उत्तर – सिंचाई के लिए नहरें बनवाना, ट्यूबवेल लगाना, या बारिश का पानी इकट्ठा करने के लिए छोटे तालाब बनाना।

» ग्रामीण क्षेत्रों में साख का महत्व और संस्थागत संरचना

प्रश्न 9 (आसान). साख या ऋण का क्या मतलब है?
उत्तर – पैसा उधार लेना या देना।

प्रश्न 10 (आसान). स्वतंत्रता से पहले ग्रामीण क्षेत्रों में कर्ज़ का मुख्य स्रोत कौन था?
उत्तर – महाजन और व्यापारी।

प्रश्न 11 (मध्यम). NABARD की स्थापना किस उद्देश्य से की गई थी?
उत्तर – ग्रामीण वित्त व्यवस्था को नियंत्रित और समन्वित करने के लिए।

प्रश्न 12 (कठिन). ग्रामीण क्षेत्रों में संस्थागत साख के विस्तार से किसानों को क्या लाभ हुआ?
उत्तर – कम ब्याज दरों पर कर्ज़ मिलने लगा, महाजनों के शोषण से मुक्ति मिली, और कृषि उत्पादन बढ़ाने में मदद मिली।

» स्वयं सहायता समूह (SHG) और सूक्ष्म-ऋण

प्रश्न 13 (आसान). स्वयं सहायता समूह में आमतौर पर कितने सदस्य होते हैं?
उत्तर – 15-20 सदस्य

प्रश्न 14 (आसान). सूक्ष्म-ऋण का क्या अर्थ है?
उत्तर – बहुत छोटी राशि का कर्ज़

प्रश्न 15 (मध्यम). स्वयं सहायता समूहों में ज़्यादातर महिलाएँ ही क्यों शामिल होती हैं?
उत्तर – महिलाएँ छोटी-छोटी बचत करके आत्मनिर्भर बनना चाहती हैं और परिवार की ज़रूरतों को पूरा करना चाहती हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ औपचारिक कर्ज़ मिलना मुश्किल होता है।

प्रश्न 16 (कठिन). स्वयं सहायता समूह ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सशक्तिकरण में कैसे मदद करते हैं?
उत्तर – SHG महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाते हैं, उनमें बचत की आदत डालते हैं, और उन्हें अपनी छोटी व्यावसायिक ज़रूरतों या व्यक्तिगत ज़रूरतों के लिए आसानी से कर्ज़ उपलब्ध कराते हैं, जिससे वे निर्णय लेने में अधिक सक्षम बनती हैं और समाज में उनकी स्थिति सुधरती है।

» ग्रामीण बैंकिंग का आलोचनात्मक मूल्यांकन

प्रश्न 17 (आसान). ग्रामीण बैंकिंग के कोई दो सकारात्मक प्रभाव बताइए।
उत्तर – कृषि और गैर-कृषि उत्पादन में वृद्धि, किसानों को हरित क्रांति के बाद साख सुविधाएँ।

प्रश्न 18 (आसान). ग्रामीण बैंकिंग की मुख्य कमियों में से एक क्या है?
उत्तर – जमा प्रवाह की संस्कृति का अभाव / ऋण वसूली की समस्या।

प्रश्न 19 (मध्यम). जन-धन योजना ग्रामीण बैंकिंग की किस कमी को दूर करने में मदद करती है?
उत्तर – जन-धन योजना लोगों को बैंक खाते खोलने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे जमा संस्कृति को बढ़ावा मिलता है और वित्तीय समावेशन बढ़ता है, जिससे बैंकिंग की पहुँच बढ़ती है।

प्रश्न 20 (कठिन). ग्रामीण ऋण वसूली की समस्या किसानों के लिए आत्महत्या जैसे गंभीर कदम उठाने का कारण कैसे बनती है? समझाइए।
उत्तर – जब किसान फसल खराब होने या आय कम होने के कारण ऋण नहीं चुका पाते, तो वे भारी दबाव में आ जाते हैं। बैंक से या साहूकार से लिया गया ऋण उनके लिए एक बड़ा बोझ बन जाता है, और जब कोई रास्ता नहीं दिखता, तो कुछ किसान हताशा में आत्महत्या जैसा कठोर कदम उठा लेते हैं।

» कृषि विपणन व्यवस्था और उसकी चुनौतियाँ

प्रश्न 21 (आसान). कृषि विपणन में 'संग्रह' का क्या मतलब है?
उत्तर – फसल कटने के बाद उसे एक जगह इकट्ठा करना।

प्रश्न 22 (आसान). स्वतंत्रता-पूर्व किसानों की दो मुख्य चुनौतियाँ क्या थीं?
उत्तर – तोल में हेरा-फेरी और बाज़ार भाव की जानकारी न होना।

प्रश्न 23 (मध्यम). भंडारण सुविधाओं की कमी से किसान को क्या नुकसान होता है?
उत्तर – किसान अपनी फसल को अच्छे दाम मिलने तक रोक नहीं पाता और उसे कम कीमत पर बेचना पड़ता है, या फसल खराब हो जाती है।

प्रश्न 24 (कठिन). क्या आज भी किसानों को कृषि विपणन में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? उदाहरण देकर समझाओ।
उत्तर – हाँ, आज भी किसानों को बाज़ार की सही जानकारी, पर्याप्त भंडारण और परिवहन सुविधाओं की कमी, और बिचौलियों के कारण कम दाम जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

» कृषि विपणन में सुधार हेतु सरकारी उपाय

प्रश्न 25 (आसान). सरकार द्वारा कृषि विपणन में सुधार के लिए उठाए गए कोई दो मुख्य कदम बताओ।
उत्तर – बाजारों का नियमन और आधारिक संरचना का प्रावधान।

प्रश्न 26 (आसान). MSP का पूरा नाम क्या है और यह क्यों ज़रूरी है?
उत्तर – MSP का पूरा नाम है 'न्यूनतम समर्थन मूल्य'। यह इसलिए ज़रूरी है ताकि किसानों को उनकी फसल का एक निश्चित और सही दाम मिल सके, चाहे बाज़ार में कीमत कम हो जाए।

प्रश्न 27 (मध्यम). सहकारी समितियाँ किसानों को कृषि विपणन में कैसे मदद करती हैं? उदाहरण देकर समझाओ।
उत्तर – सहकारी समितियाँ किसानों को एक साथ मिलकर अपनी फसल बेचने में मदद करती हैं, जिससे उन्हें बिचौलियों से छुटकारा मिलता है और बेहतर दाम मिलते हैं। जैसे गुजरात में दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियाँ, जहाँ किसान अपना दूध एक जगह जमा करते हैं और एक अच्छी कीमत पर बेच पाते हैं। इससे उनकी मोल-भाव करने की शक्ति बढ़ जाती है।

प्रश्न 28 (कठिन). सरकारी उपायों के बावजूद भी निजी व्यापारियों का कृषि मंडियों पर वर्चस्व क्यों बना हुआ है? इसे दूर करने के लिए और क्या किया जा सकता है?
उत्तर – सरकारी उपायों के बावजूद निजी व्यापारियों का वर्चस्व इसलिए बना हुआ है क्योंकि सरकारी संस्थाएँ और सहकारी समितियाँ अभी भी कुल कृषि उत्पादन का एक छोटा हिस्सा ही संभाल पाती हैं। साथ ही, अभी भी बहुत से ग्रामीण इलाकों में नियमित मंडियाँ नहीं हैं। इसे दूर करने के लिए सरकार को और ज़्यादा मंडियों का विकास करना होगा, सहकारी आंदोलन को और मजबूत करना होगा, और छोटे किसानों तक सरकारी योजनाओं की पूरी जानकारी और लाभ पहुँचाना होगा, साथ ही किसानों को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुँचने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

» वैकल्पिक क्रय-विक्रय माध्यमों का प्रादुर्भाव

प्रश्न 29 (आसान). निम्न में से कौन-सा 'वैकल्पिक क्रय-विक्रय माध्यम' का उदाहरण नहीं है: a) किसान बाज़ार b) अनुबंध खेती c) सरकारी मंडी d) रिटेल चेन?
उत्तर – c) सरकारी मंडी

प्रश्न 30 (आसान). किसान बाज़ार का मुख्य लाभ क्या है?
उत्तर – किसान सीधे ग्राहकों को अपनी उपज बेच सकते हैं और बिचौलियों से बच सकते हैं।

प्रश्न 31 (मध्यम). अनबंध खेती में, किसान को क्या आश्वासन मिलता है और उसे क्या सुविधाएं मिल सकती हैं?
उत्तर – किसान को पूर्व-निर्धारित कीमत पर अपनी उपज खरीदने का आश्वासन मिलता है, और उसे अक्सर बीज व अन्य खेती के सामान की सहायता भी मिलती है।

प्रश्न 32 (कठिन). 'वैकल्पिक क्रय-विक्रय माध्यमों' का प्रादुर्भाव किसानों की आय बढ़ाने में कैसे मदद करता है? विस्तार से समझाएं।
उत्तर – यह किसानों को बिचौलियों के हस्तक्षेप से बचाता है, जिससे उन्हें अपनी उपज का बेहतर दाम मिलता है। साथ ही, यह बाजार तक उनकी सीधी पहुँच बढ़ाता है, चाहे वह सीधे ग्राहक तक हो (किसान बाज़ार) या किसी बड़ी कंपनी तक (अनुबंध खेती)। इससे किसानों की कीमत संबंधी अनिश्चितता और जोखिम कम होते हैं।

» उत्पादक गतिविधियों का विविधीकरण: आवश्यकता और प्रकार

प्रश्न 33 (आसान). उत्पादक गतिविधियों के विविधीकरण का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – आजीविका के जोखिम को कम करना और ग्रामीण आय बढ़ाना।

प्रश्न 34 (आसान). विविधीकरण के दो मुख्य पहलू कौन से हैं?
उत्तर – फसल विविधीकरण और गैर-कृषि कार्यों में संलग्नता।

प्रश्न 35 (मध्यम). एक किसान जो सिर्फ़ चावल उगाता है, वह 'फसल विविधीकरण' कैसे कर सकता है?
उत्तर – वह अपने खेत के कुछ हिस्से में चावल के साथ-साथ दालें, सब्जियां या तिलहन जैसी अन्य फसलें भी उगा सकता है।

प्रश्न 36 (कठिन). किसान को केवल फसल विविधीकरण पर ही क्यों निर्भर नहीं रहना चाहिए, गैर-कृषि कार्यों में भी क्यों संलग्न होना चाहिए?
उत्तर – क्योंकि मौसम पर आधारित फसल विविधीकरण में भी कभी-कभी बड़े नुकसान का खतरा रहता है। गैर-कृषि कार्य जैसे पशुपालन या हस्तशिल्प आय का अधिक स्थिर स्रोत प्रदान करते हैं, जिससे कृषि क्षेत्र के जोखिम कम होते हैं और साल भर कमाई बनी रहती है।

» पशुपालन, मत्स्य पालन और बागवानी

प्रश्न 37 (आसान). डेयरी उद्योग किस प्रकार के विविधीकरण का उदाहरण है?
उत्तर – पशुपालन

प्रश्न 38 (आसान). मछली पालन से सबसे ज़्यादा कौन से राज्य जुड़े हुए हैं?
उत्तर – पश्चिम बंगाल, केरल, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु

प्रश्न 39 (मध्यम). ऑपरेशन फ्लड का संबंध किस उत्पादन वृद्धि से है और इसने ग्रामीण आय में कैसे योगदान दिया?
उत्तर – ऑपरेशन फ्लड का संबंध दूध उत्पादन वृद्धि से है। इसने किसानों को अपना दूध सहकारी समितियों के माध्यम से बेचने का मौका दिया, जिससे उनकी आय स्थिर हुई और बढ़ी।

प्रश्न 40 (कठिन). पशुपालन, मत्स्य पालन और बागवानी, तीनों में महिलाओं का योगदान किस प्रकार अलग-अलग है?
उत्तर – पशुपालन में महिलाएँ बड़ी संख्या में रोज़गार पाती हैं। मत्स्य पालन में वे सीधे मछली पकड़ने में कम होती हैं, लेकिन 60% निर्यात और 40% आंतरिक व्यापार संभालती हैं। बागवानी में फूल रोपण, नर्सरी देखभाल, हाइब्रिड बीज उत्पादन जैसे कार्यों से उनकी आय बढ़ी है।

» सूचना प्रौद्योगिकी और ग्रामीण विकास

प्रश्न 41 (आसान). सूचना प्रौद्योगिकी का एक फायदा बताओ जो गाँव के लोगों को मिलता है.
उत्तर – सही मौसम की जानकारी मिलना.

प्रश्न 42 (आसान). क्या IT सिर्फ शहरों के लिए है या गाँवों के लिए भी?
उत्तर – यह गाँवों के लिए भी है.

प्रश्न 43 (मध्यम). गाँवों में 'खाद्य सुरक्षा' में IT कैसे मदद कर सकती है?
उत्तर – यह उन क्षेत्रों का पहले से अनुमान लगा सकती है जहाँ खाने की कमी हो सकती है, जिससे समय रहते मदद पहुंचाई जा सके.

प्रश्न 44 (कठिन). सूचना प्रौद्योगिकी ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े स्तर पर रोज़गार के अवसर कैसे पैदा कर सकती है?
उत्तर – इससे नई जानकारियाँ मिलती हैं (जैसे बाज़ार, नई तकनीकें), जिससे लोग नए काम सीख सकते हैं, ऑनलाइन बिज़नेस कर सकते हैं, और कृषि आधारित उद्योगों में भी सुधार आता है, जिससे नए रोज़गार बनते हैं.

» धारणीय विकास और जैविक कृषि

प्रश्न 45 (आसान). धारणीय विकास का क्या अर्थ है?
उत्तर – पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना विकास करना, ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी संसाधन बचें।

प्रश्न 46 (आसान). जैविक कृषि में किस चीज़ का उपयोग नहीं होता?
उत्तर – रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का।

प्रश्न 47 (मध्यम). जैविक कृषि के कोई दो लाभ बताइए।
उत्तर – जैविक कृषि से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और हमें स्वस्थ, रसायन-मुक्त भोजन मिलता है।

प्रश्न 48 (कठिन). धारणीय विकास आज हमारे लिए क्यों इतना महत्वपूर्ण है?
उत्तर – क्योंकि लगातार बढ़ते प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य को गंभीर खतरा है। धारणीय विकास हमें एक ऐसा रास्ता दिखाता है जहाँ हम अपनी वर्तमान ज़रूरतों को पूरा करते हुए भविष्य के लिए भी पृथ्वी को सुरक्षित रख सकें।

» जैविक कृषि के लाभ और सीमाएँ

प्रश्न 49 (आसान). जैविक कृषि का एक मुख्य लाभ क्या है?
उत्तर – लागत कम होती है / स्वस्थ भोजन मिलता है.

प्रश्न 50 (आसान). जैविक कृषि में किसानों को किस प्रकार की शुरुआती चुनौती का सामना करना पड़ सकता है?
उत्तर – प्रारंभिक उत्पादकता कम होना.

प्रश्न 51 (मध्यम). जैविक कृषि में उत्पादों को बाज़ार में बेचने में क्या समस्या आ सकती है?
उत्तर – ये उत्पाद रासायनिक उत्पादों की तुलना में जल्दी खराब हो सकते हैं.

प्रश्न 52 (कठिन). बड़े पैमाने पर छोटे और सीमांत किसानों के लिए जैविक कृषि को अपनाना क्यों कठिन हो सकता है?
उत्तर – क्योंकि शुरुआती वर्षों में उत्पादकता कम होती है, जिससे उनकी आय प्रभावित हो सकती है, और वे इस जोखिम को उठा नहीं पाते.

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए एक गाँव में 100 परिवार हैं और 70 परिवार कृषि पर निर्भर हैं। अगर कृषि की उत्पादकता कम है, तो गाँव के विकास पर क्या असर पड़ेगा?

› पहला कदम: पहचानें कि गाँव की अर्थव्यवस्था कृषि पर कितनी निर्भर है। यहाँ 70% परिवार कृषि से जुड़े हैं।

› दूसरा कदम: समझें कि कम उत्पादकता का क्या मतलब है। इसका मतलब है कि किसान अपनी ज़मीन से उतना अनाज नहीं उगा पा रहे, जितना उन्हें चाहिए या जितना उगाया जा सकता है।

› तीसरा कदम: देखें कि इससे गाँव पर क्या प्रभाव होगा। जब कृषि की पैदावार कम होती है, तो किसानों की आमदनी घट जाती है। इससे वे अपने परिवार की ज़रूरतें पूरी नहीं कर पाते, बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते, और बीमारी में इलाज नहीं करा पाते।

› चौथा कदम: सोचें कि यह पूरे गाँव को कैसे प्रभावित करेगा। कम आमदनी से गाँव के बाज़ार में खरीदारी कम हो जाती है, जिससे छोटे दुकानदारों और व्यापारियों को भी नुकसान होता है। गरीबी बढ़ती है, और लोग बेहतर अवसरों की तलाश में शहर जाने लगते हैं।

› पांचवां कदम: निष्कर्ष निकालें। इस तरह, कृषि की कम उत्पादकता सीधे तौर पर गाँव के समग्र विकास को रोक देती है और गरीबी बढ़ाती है।

› छठा कदम: इसका समाधान क्या हो सकता है? हमें कृषि में नए तरीके, बेहतर बीज, सिंचाई की सुविधाएँ और किसानों को ऋण उपलब्ध कराकर उनकी उत्पादकता बढ़ानी होगी।

उत्तर – कम कृषि उत्पादकता से गाँव में गरीबी बढ़ती है, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं पर असर पड़ता है, और कुल मिलाकर गाँव का विकास रुक जाता है।

उदाहरण 2. एक गाँव में ग्रामीण विकास के तहत कौन-कौन से कदम उठाए जा सकते हैं, जिससे वहाँ के लोगों का जीवन स्तर सुधरे?

› पहला कदम: मानव संसाधन का विकास करेंगे। यानी, गाँव में सभी बच्चों के लिए स्कूल की अच्छी व्यवस्था करेंगे, खासकर लड़कियों के लिए। वयस्कों के लिए कौशल विकास (skill development) के कार्यक्रम चलाएंगे, जैसे सिलाई, बुनाई या कंप्यूटर सिखाना।

› दूसरा कदम: स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार करेंगे। गाँव में एक छोटा स्वास्थ्य केंद्र खोलेंगे, जहाँ डॉक्टर और नर्स उपलब्ध हों। स्वच्छता पर ध्यान देंगे, शौचालय बनवाएंगे और साफ पानी की व्यवस्था करेंगे।

› तीसरा कदम: आधारिक संरचना का विकास करेंगे। गाँव तक पक्की सड़क बनवाएंगे, चौबीस घंटे बिजली की सुविधा देंगे, सिंचाई के लिए नहरें या ट्यूबवेल लगवाएंगे ताकि किसान पूरे साल खेती कर सकें।

› चौथा कदम: खेती और गैर-खेती गतिविधियों को बढ़ावा देंगे। किसानों को नई तकनीक और अच्छे बीज के बारे में जानकारी देंगे। गाँव में छोटे उद्योग लगाने के लिए मदद करेंगे, जैसे अचार बनाने का काम या छोटे हस्तशिल्प।

उत्तर – इन सभी कदमों से गाँव में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार और बेहतर जीवन की सुविधाएं मिलेंगी, जिससे लोगों का जीवन स्तर सुधरेगा और गाँव का सर्वांगीण विकास होगा।

उदाहरण 3. मान लीजिए एक गाँव में रमेश नाम के किसान को अपनी गेहूँ की फसल के लिए बीज, खाद और ट्रैक्टर किराए पर लेने के लिए ₹50,000 की ज़रूरत है। उसके पास अपनी कोई बचत नहीं है। वह यह कर्ज़ कहाँ से ले सकता है और संस्थागत स्रोतों से लेने के क्या फायदे हैं?

› पहला कदम: रमेश के पास दो विकल्प हैं - या तो वह किसी गाँव के साहूकार या महाजन के पास जाए, या फिर किसी सरकारी बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRB), या सहकारी बैंक के पास जाए।

› दूसरा कदम: अगर वह साहूकार के पास जाता है, तो उसे बहुत ज़्यादा ब्याज देना पड़ सकता है (जैसे 5-10% प्रति माह), और हो सकता है साहूकार उसकी ज़मीन के कागज़ात भी गिरवी रख ले।

› तीसरा कदम: अगर वह बैंक या सहकारी समिति के पास जाता है, तो उसे कम ब्याज दर (जैसे 7-12% प्रति वर्ष) पर कर्ज़ मिल जाएगा। उसे चुकाने के लिए भी ज़्यादा समय मिलेगा, और कोई उसकी मजबूरी का फायदा नहीं उठाएगा।

› चौथा कदम: रमेश को बैंक या सहकारी समिति से कर्ज़ लेना चाहिए। इसके लिए उसे अपनी ज़मीन के कागज़ात, पहचान पत्र और फसल का ब्यौरा देना होगा। बैंक उसकी पात्रता देखकर उसे कर्ज़ देगा।

› पांचवां कदम: फसल बेचकर रमेश आसानी से बैंक का कर्ज़ चुका पाएगा और अगली फसल के लिए फिर से कर्ज़ ले पाएगा।

› अंतिम परिणाम: संस्थागत स्रोतों से कर्ज़ लेकर रमेश अपनी खेती को बेहतर बना सकता है और महाजनों के शोषण से बच सकता है।

उत्तर – रमेश को किसी संस्थागत स्रोत जैसे बैंक या सहकारी समिति से ₹50,000 का कर्ज़ लेना चाहिए। इससे उसे कम ब्याज दर पर सुरक्षित कर्ज़ मिलेगा और वह अपनी फसल की पैदावार बढ़ा पाएगा।

उदाहरण 4. एक स्वयं सहायता समूह में 20 महिलाएँ हैं। हर महिला महीने के 100 रुपये बचाती है। 6 महीने में समूह के पास कुल कितनी राशि जमा हो जाएगी? यदि एक महिला को 8000 रुपये का सूक्ष्म-ऋण चाहिए, तो क्या समूह उसे यह राशि दे पाएगा?

› एक महिला की मासिक बचत = 100 रुपये

› समूह में महिलाएँ = 20

› समूह की मासिक बचत = 20 महिलाएँ * 100 रुपये/महिला = 2000 रुपये

› 6 महीने में कुल जमा राशि = 2000 रुपये/माह * 6 माह = 12,000 रुपये

› हाँ, समूह 12,000 रुपये में से 8000 रुपये का सूक्ष्म-ऋण उस महिला को आसानी से दे पाएगा।

उत्तर – 6 महीने में समूह के पास कुल 12,000 रुपये जमा हो जाएंगे, और हाँ, समूह 8000 रुपये का सूक्ष्म-ऋण दे पाएगा।

उदाहरण 5. मान लीजिए एक ग्रामीण बैंक ने 100 किसानों को फसल के लिए कुल ₹5 लाख का ऋण दिया। साल के अंत में, 20 किसान अपनी फसल खराब होने के कारण ऋण नहीं चुका पाए। इसका ग्रामीण बैंकिंग व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

› सबसे पहले, यह समझना होगा कि 20% ऋण वापस नहीं आया (20/100 * 100 = 20%)।

› दूसरा, बैंक को ₹1 लाख का नुकसान हुआ (₹5 लाख का 20%)।

› तीसरा, इस नुकसान के कारण बैंक के पास अगले साल नए किसानों को ऋण देने के लिए कम पैसे बचेंगे।

› चौथा, बैंक का भरोसा कम होगा और उसे ऋण वसूली की अपनी प्रणाली को सुधारने की ज़रूरत महसूस होगी।

उत्तर – इस स्थिति से बैंक की वित्तीय स्थिरता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, ऋण देने की क्षमता कम होगी, और भविष्य में ऋण वसूली की प्रक्रिया को और मजबूत करने की आवश्यकता होगी।

उदाहरण 6. एक किसान ने 50 क्विंटल गेहूँ उगाया। अगर उसे भंडारण की सुविधा नहीं मिलती है और बाज़ार में भाव 1500 रुपये प्रति क्विंटल है, लेकिन उसे 1200 रुपये प्रति क्विंटल पर बेचना पड़ता है। उसे कितना नुकसान हुआ?

› सही कीमत = 50 क्विंटल * 1500 रुपये/क्विंटल = 75,000 रुपये

› बेची गई कीमत = 50 क्विंटल * 1200 रुपये/क्विंटल = 60,000 रुपये

› नुकसान = सही कीमत - बेची गई कीमत

› नुकसान = 75,000 रुपये - 60,000 रुपये = 15,000 रुपये

उत्तर – किसान को 15,000 रुपये का नुकसान हुआ।

उदाहरण 7. सरकार ने कृषि विपणन में सुधार के लिए 'आधारिक संरचना' के तहत क्या-क्या व्यवस्थाएँ की हैं?

› पहला, हमें समझना है कि 'आधारिक संरचना' क्या होती है। इसका मतलब है वो सुविधाएँ जो किसी काम को अच्छे से चलाने के लिए ज़रूरी होती हैं।

› कृषि विपणन में, फसल को खेत से मंडी तक पहुँचाने और सुरक्षित रखने के लिए क्या-क्या चाहिए?

› हमें सड़कें चाहिए ताकि फसल आसानी से मंडी तक पहुँच सके।

› रेल मार्ग चाहिए ताकि दूर-दराज के इलाकों तक भी फसल जा सके।

› भंडारगृह या गोदाम चाहिए ताकि फसल खराब न हो।

› शीतगृह (cold storage) चाहिए, खासकर फलों और सब्जियों के लिए, ताकि वे ताज़ी रहें।

› और ऐसी इकाइयाँ जहाँ फसल पर प्रोसेसिंग हो सके (जैसे टमाटर से सॉस बनाना)।

उत्तर – सरकार ने कृषि विपणन में सुधार के लिए सड़कों, रेलमार्गों, भंडारगृहों, गोदामों, शीतगृहों और प्रसंस्करण इकाइयों जैसी भौतिक आधारिक संरचनाओं का प्रावधान किया है।

उदाहरण 8. एक आलू उगाने वाले छोटे किसान रामू को अपनी फ़सल पारंपरिक मंडी में बेचने पर अच्छा दाम नहीं मिल रहा था। उसे अपनी आय बढ़ाने के लिए 'वैकल्पिक क्रय-विक्रय माध्यमों' में से क्या चुनना चाहिए, और क्यों?

› पहला कदम: रामू को अपनी समस्या समझनी चाहिए - मंडी में बिचौलिए और कम दाम।

› दूसरा कदम: उसे दो मुख्य वैकल्पिक माध्यमों पर विचार करना चाहिए - किसान बाज़ार या अनुबंध खेती।

› तीसरा कदम: अगर उसके पास मंडी तक जाने का साधन नहीं है और वह खुद ग्राहकों तक पहुँच सकता है, तो किसान बाज़ार (जैसे 'रायथूबाज') बेहतर होगा, जहाँ वह सीधे ग्राहक को बेचकर ज़्यादा पैसे कमा सकता है।

› चौथा कदम: अगर उसे अपनी फ़सल के लिए तय कीमत और बीज-खाद की मदद चाहिए, तो वह किसी चिप्स बनाने वाली कंपनी के साथ 'अनुबंध खेती' का समझौता कर सकता है।

› निष्कर्ष: दोनों ही माध्यमों से रामू की आय बढ़ सकती है, क्योंकि ये उसे बिचौलियों से बचाते हैं और सीधे ग्राहक या खरीदार तक पहुँचाते हैं।

उत्तर – रामू को किसान बाज़ार या अनुबंध खेती, दोनों में से कोई भी विकल्प चुनना चाहिए जो उसकी स्थिति के लिए सबसे उपयुक्त हो, क्योंकि ये उसे अपनी फसल का बेहतर दाम दिलाने में मदद करेंगे।

उदाहरण 9. एक किसान अपनी पूरी जमीन पर केवल गेहूं की खेती करता है। पिछले साल सूखे के कारण उसकी फसल खराब हो गई और उसे बहुत नुकसान हुआ। इस नुकसान को कम करने के लिए वह कौन सा विविधीकरण अपना सकता है?

› पहला कदम: किसान सिर्फ़ गेहूं पर निर्भर न रहे। उसे अपनी जमीन के कुछ हिस्से पर अन्य फसलें भी लगानी चाहिए जो सूखे के प्रति अधिक प्रतिरोधी हों, जैसे बाजरा या कुछ सब्जियां। (यह फसल विविधीकरण है)

› दूसरा कदम: वह खेती के साथ-साथ कुछ और काम भी शुरू कर सकता है। जैसे, कुछ मुर्गियां पालना या मछली पालन करना, जिससे उसे अंडे या मछली बेचकर अतिरिक्त आय मिल सके। (यह गैर-कृषि कार्यों में संलग्नता है)

› तीसरा कदम: वह अपने खेत में लगे पेड़ों से फल बेच सकता है या पशुओं के लिए चारा उगा सकता है।

› इन उपायों से उसकी आय का स्रोत सिर्फ़ गेहूं पर निर्भर नहीं रहेगा और एक जगह नुकसान होने पर दूसरी जगह से उसे सहारा मिल जाएगा।

उत्तर – किसान को 'फसल विविधीकरण' अपनाना चाहिए (गेहूं के साथ अन्य फसलें) और 'गैर-कृषि कार्यों में संलग्नता' (जैसे मुर्गी पालन या मछली पालन) भी करनी चाहिए ताकि आय के कई स्रोत बन सकें।

उदाहरण 10. एक गाँव में किसान रामू सिर्फ धान की खेती करता था, लेकिन सूखा पड़ने से उसकी फसल खराब हो गई। उसे अपनी आय में स्थिरता लाने के लिए किन तीन विकल्पों में से कोई एक चुनना चाहिए था?

› पहला विकल्प: पशुपालन - रामू गाय या भैंस पाल सकता था ताकि वह दूध बेचकर आय कमा सके, या फिर मुर्गियाँ पालकर अंडे बेच सकता था।

› दूसरा विकल्प: मत्स्य पालन - अगर उसके गाँव के पास कोई तालाब या नदी है, तो वह मछली पालन कर सकता था।

› तीसरा विकल्प: बागवानी - वह अपने खेत के एक हिस्से में फल, सब्जियां या फूल उगा सकता था, जिनकी बाजार में अच्छी कीमत मिलती है।

उत्तर – रामू को इन तीनों में से कोई भी विकल्प अपनाना चाहिए था, जिससे उसकी आय सिर्फ धान की खेती पर निर्भर न रहे और जोखिम कम हो जाए।

उदाहरण 11. मान लीजिए एक गाँव में टमाटर की फसल अच्छी हुई है, लेकिन किसान को नहीं पता कि इसे कहाँ और किस भाव पर बेचें ताकि ज़्यादा फायदा हो. सूचना प्रौद्योगिकी कैसे मदद कर सकती है?

› पहला कदम: किसान अपने स्मार्टफ़ोन पर इंटरनेट का इस्तेमाल करके अलग-अलग मंडियों में टमाटर के मौजूदा भाव देखेगा.

› दूसरा कदम: वह यह भी देख पाएगा कि कौन सी मंडी उसके गाँव से पास है और वहाँ पहुँचने का खर्च कितना आएगा.

› तीसरा कदम: इन सारी जानकारियों को मिलाकर, किसान यह तय कर पाएगा कि उसे किस मंडी में और कब टमाटर बेचना सबसे फायदेमंद रहेगा.

› चौथा कदम: कुछ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स सीधे किसानों को खरीदारों से जोड़ने में भी मदद कर सकते हैं, जिससे बीच के दलाल कम हो जाते हैं और किसान को बेहतर दाम मिलता है.

उत्तर – सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से किसान को सही समय पर सही जानकारी मिली, जिससे उसे अपनी फसल का उचित मूल्य मिला और नुकसान से बच गया.

उदाहरण 12. एक किसान को अपने खेत में टमाटर उगाना है. वह रासायनिक उर्वरकों के बजाय जैविक विधियों का उपयोग कैसे कर सकता है?

› पहला कदम: किसान रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक खरीदना बंद कर देगा.

› दूसरा कदम: वह अपने पशुओं के गोबर से खाद बनाएगा, जिसे 'कम्पोस्ट खाद' या 'गोबर की खाद' कहते हैं.

› तीसरा कदम: फसलों में कीट लगने पर नीम के पत्तों का घोल या अन्य प्राकृतिक तरीके अपनाएगा, रासायनिक स्प्रे नहीं करेगा.

› चौथा कदम: मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए फसल चक्र (जैसे एक बार दालें उगाना, फिर अनाज) अपनाएगा.

› पांचवा कदम: खेत में 'केंचुआ खाद' का उपयोग करेगा, जो मिट्टी को उपजाऊ बनाती है.

उत्तर – इस तरह, किसान रासायनिक खेती की बजाय जैविक कृषि अपनाकर पर्यावरण और अपनी मिट्टी को स्वस्थ रख सकता है.

उदाहरण 13. एक किसान के पास 5 एकड़ ज़मीन है. वह रासायनिक कृषि से जैविक कृषि में बदलना चाहता है. इस बदलाव से उसे क्या मुख्य लाभ और किस चुनौती का सामना करना पड़ सकता है?

› स्टेप 1: किसान को सबसे पहले रासायनिक खाद और कीटनाशक बंद करने होंगे और गोबर की खाद, कम्पोस्ट, नीम का तेल जैसी चीज़ें इस्तेमाल करनी होंगी.

› स्टेप 2: इससे उसका 'लागत' (रासायनिक चीज़ों का खर्च) कम हो जाएगा, क्योंकि जैविक खाद अक्सर खुद ही बन जाती है या सस्ती मिलती है.

› स्टेप 3: उसकी फसल 'स्वस्थ' होगी और उसमें ज़्यादा पोषक तत्व होंगे, जिसकी बाज़ार में अच्छी कीमत मिल सकती है, खासकर निर्यात बाज़ार में.

› स्टेप 4: शुरुआती कुछ सालों में फसल की 'उत्पादकता' थोड़ी कम हो सकती है, जिससे उसकी आय पर असर पड़ सकता है.

› स्टेप 5: जैविक उत्पाद रासायनिक उत्पादों की तुलना में 'जल्दी खराब' हो सकते हैं, इसलिए उन्हें बेचने के लिए सही बाज़ार और भंडारण की व्यवस्था करनी होगी.

› स्टेप 6: उसे जैविक प्रमाणीकरण (organic certification) के लिए भी थोड़ा इंतज़ार करना पड़ सकता है, जिससे उसके उत्पादों को 'जैविक' का टैग मिलेगा और अच्छी कीमत मिलेगी.

उत्तर – किसान को रासायनिक खाद का खर्च कम होने, स्वस्थ भोजन और निर्यात से ज़्यादा आय का लाभ मिलेगा. वहीं, शुरुआती कम उत्पादकता और जल्दी खराब होने वाले उत्पादों को बेचना उसकी मुख्य चुनौती होगी.

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर 'ग्रामीण विकास का महत्व' पर सीधा प्रश्न पूछा जाता है, जिसमें आपको भारत के कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था और गरीबी उन्मूलन के संदर्भ में इसके महत्व को समझाना होता है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधा प्रश्न आता है कि 'ग्रामीण विकास' से आप क्या समझते हैं और इसके मुख्य क्षेत्र कौन से हैं।

• NABARD की स्थापना और उसके कार्य पर बोर्ड परीक्षा में अक्सर सवाल आते हैं, इसे अच्छे से याद कर लेना!

• यह विषय महिलाओं के सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास से जुड़ा है, इसलिए बोर्ड परीक्षा में इस पर निबंध या केस स्टडी आधारित प्रश्न आ सकते हैं। 'सूक्ष्म-ऋण' की परिभाषा और SHG की भूमिका पर विशेष ध्यान देना।

• बोर्ड परीक्षा में इस टॉपिक से ग्रामीण बैंकिंग के सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों पहलुओं पर प्रश्न आ सकते हैं। जन-धन योजना का उल्लेख करना न भूलें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। कृषि विपणन की परिभाषा और स्वतंत्रता-पूर्व व वर्तमान चुनौतियों पर सीधे प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर सीधा प्रश्न आता है कि 'कृषि विपणन में सुधार हेतु सरकार द्वारा उठाए गए मुख्य उपाय क्या हैं?' या 'नीतिगत साधनों में क्या-क्या शामिल है?' तो इन चारों बिंदुओं को अच्छे से समझकर जाना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! अक्सर 'उत्पादक गतिविधियों के विविधीकरण की आवश्यकता और इसके प्रकारों' पर सीधा प्रश्न पूछा जाता है। इसे अच्छे से समझना और इसके दोनों पहलुओं (फसल विविधीकरण और गैर-कृषि कार्य) को उदाहरणों के साथ लिखना सीख लेना।

• इन तीनों क्षेत्रों की चुनौतियों और प्रगति, खासकर 'ऑपरेशन फ्लड' जैसी पहलों पर, बोर्ड परीक्षा में अक्सर सवाल पूछे जाते हैं, तो इन्हें अच्छे से समझना!

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 'ग्रामीण विकास' या 'भारतीय अर्थव्यवस्था' से संबंधित प्रश्नों में पूछा जाता है. इसके फायदों को उदाहरणों के साथ याद रखना.

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 'धारणीय विकास' और 'जैविक कृषि' की परिभाषा और उनके लाभों को ज़रूर याद कर लेना. अक्सर इन पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं.

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. अक्सर इसके लाभ और सीमाओं पर सीधा प्रश्न आता है. इन्हें बिंदुओं में याद रखें और हर बिंदु को कम से कम एक वाक्य में समझाएँ. 'पर्यावरणीय धारणीयता' जैसे कीवर्ड ज़रूर लिखें.

एक नज़र में रिवीज़न

› ग्रामीण विकास = राष्ट्रीय विकास का केंद्र; गरीबी उन्मूलन, कृषि उत्पादकता वृद्धि।

› ग्रामीण विकास = ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पिछड़े घटकों का सर्वांगीण विकास।

› ग्रामीण साख = खेती/अन्य कार्यों हेतु ऋण। NABARD (1982) ग्रामीण वित्त का शीर्ष बैंक।

› SHG = लोग (मुख्यतः महलिाएँ) मलिकर बचत करते हैं और छोटे ऋण (सूक्ष्म-ऋण) देते हैं।

› ग्रामीण बैंकिंग ने उत्पादन बढ़ाया पर ऋण वसूली, जमा संस्कृति की समस्या है; जन-धन योजना सुधार है।

› कृषि विपणन: फसल का खेत से उपभोक्ता तक पहुँचना, चुनौतियाँ: कम दाम, भंडारण की कमी।

› सरकार के 4 उपाय: बाज़ार नियमन, आधारिक संरचना, सहकारी समिति, नीतिगत साधन।

› उत्पादक विविधीकरण: जोखिम कम करने, आय बढ़ाने के लिए फसल + गैर-कृषि कार्य।

› पशुपालन, मत्स्य पालन, बागवानी - ग्रामीण आय विविधीकरण के मुख्य आधार।

› सूचना प्रौद्योगिकी: ग्रामीण विकास में खाद्य सुरक्षा, रोजगार, सही जानकारी देने में महत्वपूर्ण.

› धारणीय विकास = पर्यावरण-अनुकूल विकास; जैविक कृषि = रसायन-मुक्त खेती, मिट्टी और स्वास्थ्य के लिए बेहतर.

› जैविक कृषि: कम लागत, स्वस्थ भोजन, निर्यात लाभ; चुनौतियाँ: प्रारंभिक कम उत्पादकता, शीघ्र खराब होना.